क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु

जन्म से अभिनिष्क्रमण तक

भाग-१

मुनि सुमेरमल (लाडनूं)

परिचय

राजस्थान के तत्कालीन जोधपुर राज्य (वर्तमान में पाली जिला) के छोटे से गाँव कण्टालिया में वि. संवत् १७८३ आषाढ़ शुक्ला १३ को ओसवाल परिवार में एक बालक का जन्म हुआ । नाम रखा गया भीखण । माँ दीपां ने, जब भीखण गर्भ में आये तब सिंह का स्वप्न देखा था । इसलिए बालक के राजा होने की उसने कल्पना संजोई थी । बालक की प्रतिभा बेजोड़ थी । झूठ से नफरत और रुढ़ियों से मुक्त जीवन की ललक उनमें शुरू से थी । समय-समय पर अपने व्यवहार से परिवार व गाँव को वे यह दर्शाते भी रहे ।

महापुरुष कभी घर की चारदीवारी में बंधे नहीं रहते । युवक भीखण की शादी हुई किन्तु उन्हें तो क्रान्ति करनी थी, सत्य की खोज में लगना था । घर में रहते यह सम्भव नहीं था । वे जैन मुनि बने, आगमों का अध्ययन किया, साधु-समुदाय में फैले शिथिलाचार और वीतराग दर्शन पर जमी मोह-राग की परत को हटाने का निर्णय लिया ।

उन्होंने सम्प्रदाय त्यागा, स्थानक को छोड़ा, सुख-सुविधा को ठुकराया, भयंकर विरोधों का सामना किया । वि. संवत् १८१७ चैत्र शुक्ला नवमी के दिन चार साथियों के साथ उन्होंने अपने गुरु रघुनाथजी से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया । लोगों ने स्थान नहीं दिया । उन्होंने बगड़ी से विहार किया, जोरों से आँधी आई । महापुरुष इन अवरोधों से कब रुकते हैं ? उनके चरण रुके नहीं , मुड़े नहीं । वहीं पास के श्मशान में बनी ठाकुर जेतसिंह जी की छतरी की ओर बढ़े । वहीं उन्होंने अपना पड़ाव किया । जगत् जिसे अपना अन्तिम पड़ाव मानता है, सत्य की खोज में निकले आचार्य भिक्षु ने उसे अपने नये जीवन का पहला पड़ाव बनाया ।

मुनि सुमेरमल (लाडनूं)

विघ्न हरण मंगल करण, स्वाम भिक्षु रो नाम ।
गुण ओलख सुमिरण करै, सरै अचिन्त्या काम ॥

प्रकाशक
मित्र परिषद्
115, ए चित्तरंजन एवेन्यु, कोलकाता - 700 073
फोन : 22352481, 22357935

मुख्य प्रवृत्तियां
- वातानुकूल प्रेक्षाध्यान केन्द्र
- होमियोपेथी व शिशु चिकित्सा केन्द्र
- अस्थि चिकित्सा केन्द्र
- सिलाई - बुनाई प्रशिक्षण केन्द्र
- समृद्ध पुस्तकालय
- विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति
- विशाल बर्तन भंडार
- असहायों को सहायता
- साहित्य सेवा

संपादक
मुनि उदितकुमार

संस्करण : द्वितीय
आचार्य भिक्षु निर्वाण द्विशताब्दी वर्ष

- अभिवन्दना कर्ता -
श्रीचन्द, उम्मेदसिंह, विजयसिंह मोहोनोत
(डीडवाना)
जयग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज
नं 3 एवं 5, चार्ल्स केम्पबेल रोड़
कोक्स टॉउन, बेंगलोर-560 005
फोन : 25483508 / 25483908
मोबाईल : 98452 12363 / 98450 40099, 20099

मुद्रक :- श्रीं ऑफसेट प्रिन्टर्स, बेंगलोर-53. फोन : 5699 2695 मोबाईल : 98440 06655
श्रीनिवासा प्रिन्टर्स, बेंगलोर-53. फोन : 23356888

मूल्य : रु ३०/-

क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु

जन्म से अभिनिष्क्रमण तक

विक्रम की अठारहवीं शताब्दी। मारवाड़ के जोधपुर राज्य का एक छोटा-सा ग्राम - कण्टालिया, वहां श्री बल्लूशाह और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती दीपांदेवी सानन्द रह रहे थे।

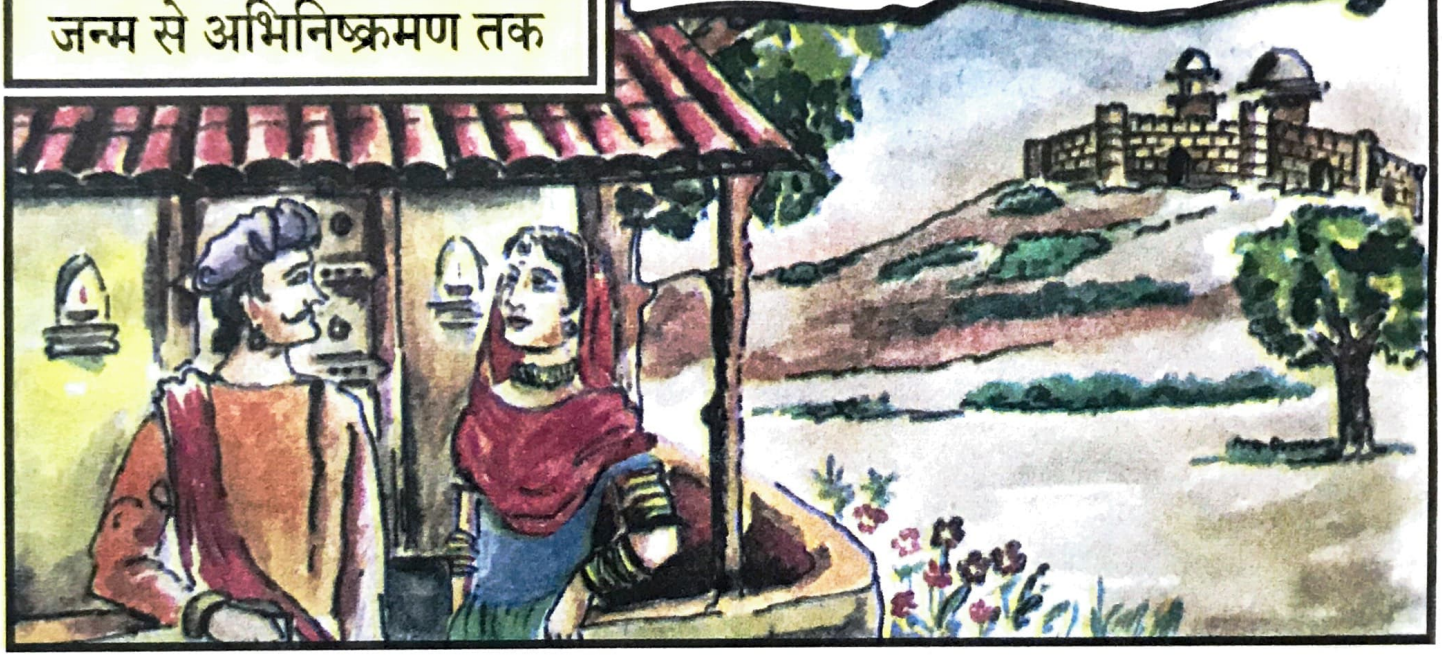

वि. सं. 1782 में दशहरा के पास एक रात्रि में दीपांदेवी ने बबर शेर का स्वप्न देखा।

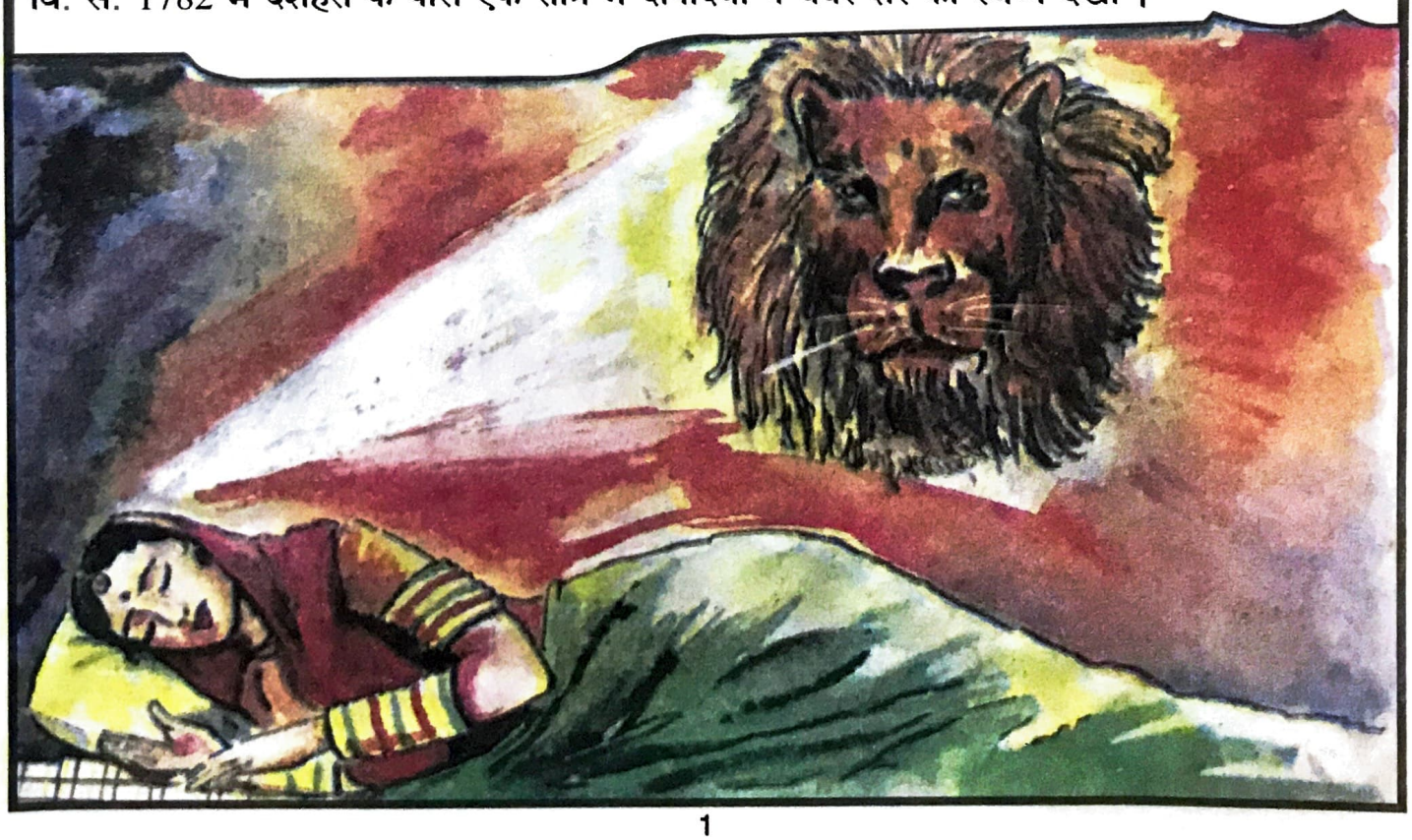

उठते ही वह सोचने लगी ।

मैंने संतों से सुना है कि सूर्य, चन्द्रमा, शेर, आदि के स्वप्न से जन्म लेने वाला बालक राजा बनता है । अवश्य ही मेरा बेटा राजा होगा ।

फिर वह नमस्कार महामन्त्र का जाप करने लगी ।

णमो अरहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं

वि. सं. 1783 आषाढ़ शुक्ला 13 की रात्रि में दीपांदेवी ने एक बालक को जन्म दिया । बुआ ने थाली बजाकर मांगलिक कार्य सम्पन्न किया ।

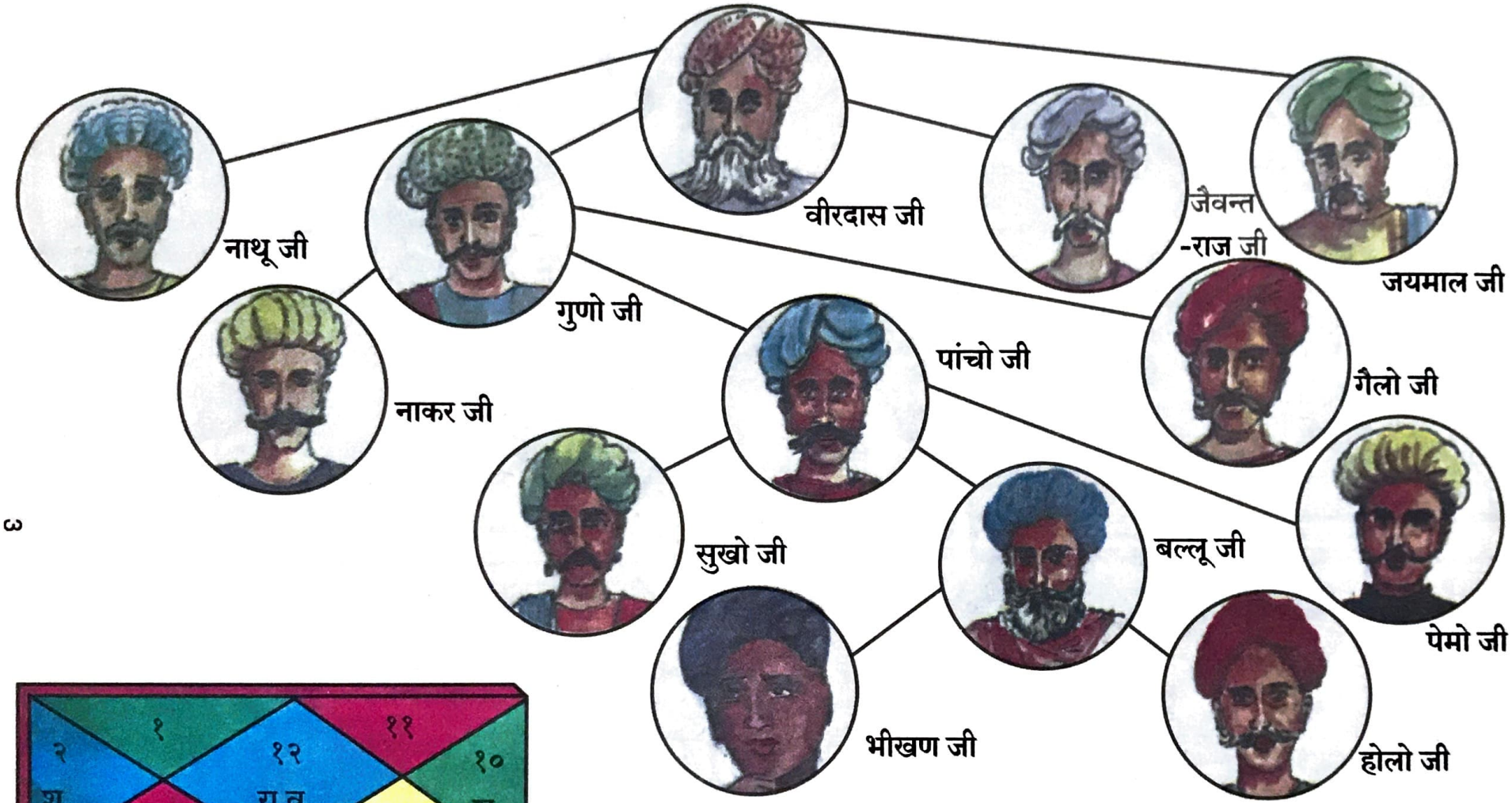

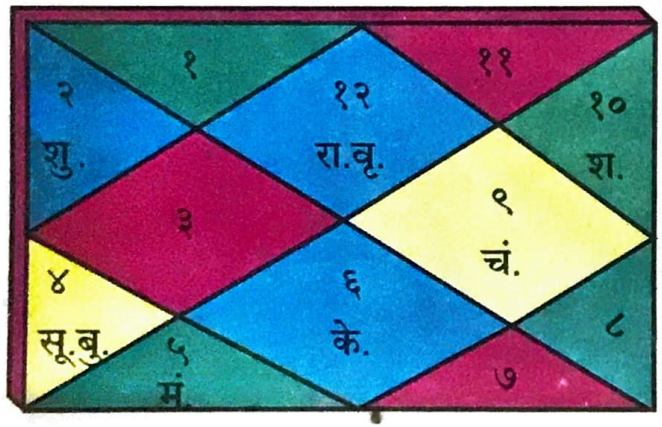

राशि के अनुसार बालक का नाम भीखण रखा गया । बालक का जन्म रात्रि काल में हुआ था । जन्मकुण्डली के ग्रह अत्यधिक बलवान थे । भीखण से चार पीढ़ी पूर्व शाह वीरदास जी पूरे इलाके में राजमान्य गणमान्य व्यक्ति थे । सिरियारी उपाश्रय के मथेरण रुपचन्द जी इस परिवार के कुलगुरू थे । उनकी बही में उल्लिखित वीरदास जी से भीखण जी तक का वंशक्रम यहाँ ऊपर दिया गया है ।

अरे ! यह तो घुटनों चलने लगा ...!
बालक भीखण धीरे-धीरे बड़ा होने लगा। अपनी बाल-सुलभ क्रियाओं से वह माता-पिता का लाड़ला हो गया।
हाँ, बेटा शाबाश खड़ा हो जा।
माँ, मैं बाहर जा रहा हूँ दोस्तों के साथ खेलने।

बालक भीखण के पिता बल्लूशाह का देहान्त शीघ्र हो गया ।

ग्राम में पाठशाला का अभाव था । इसलिए बालक भीखण ग्राम के एक व्यक्तिगत शिक्षक के पास जाकर गणित इत्यादि की शिक्षा लेने लगा ।

वहाँ उसने ब्राह्मी लिपि सीखी ।

भीखण शीघ्र ही अधिकांश विद्याओं में पारंगत हो गया ।

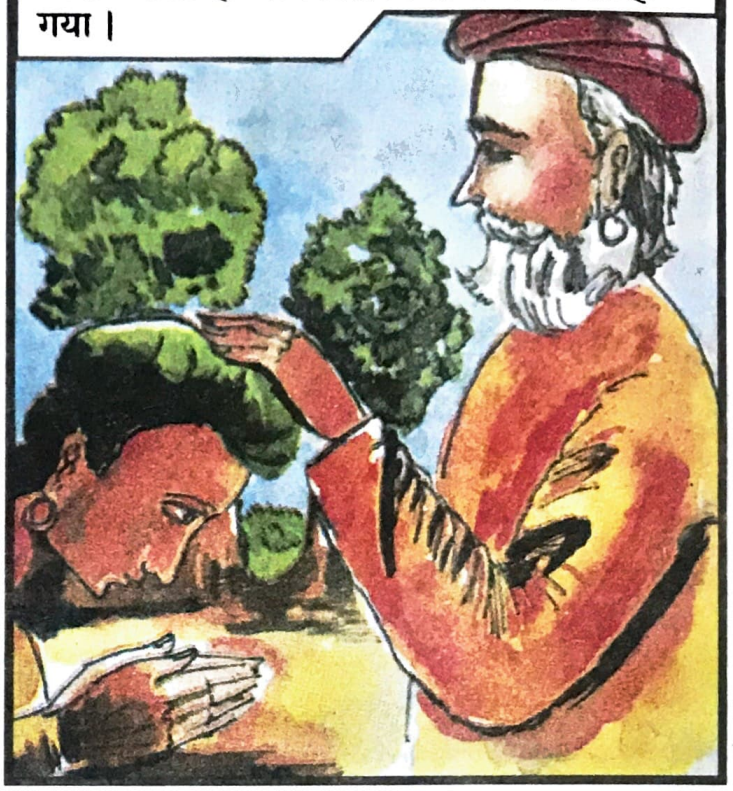

* भीखण के एक चाचा थे । भीखण अक्सर उनके घर जाया करते ।

चाचा भीखण के सिर में अक्सर प्यार से एक-दो चपत जमा देते ।

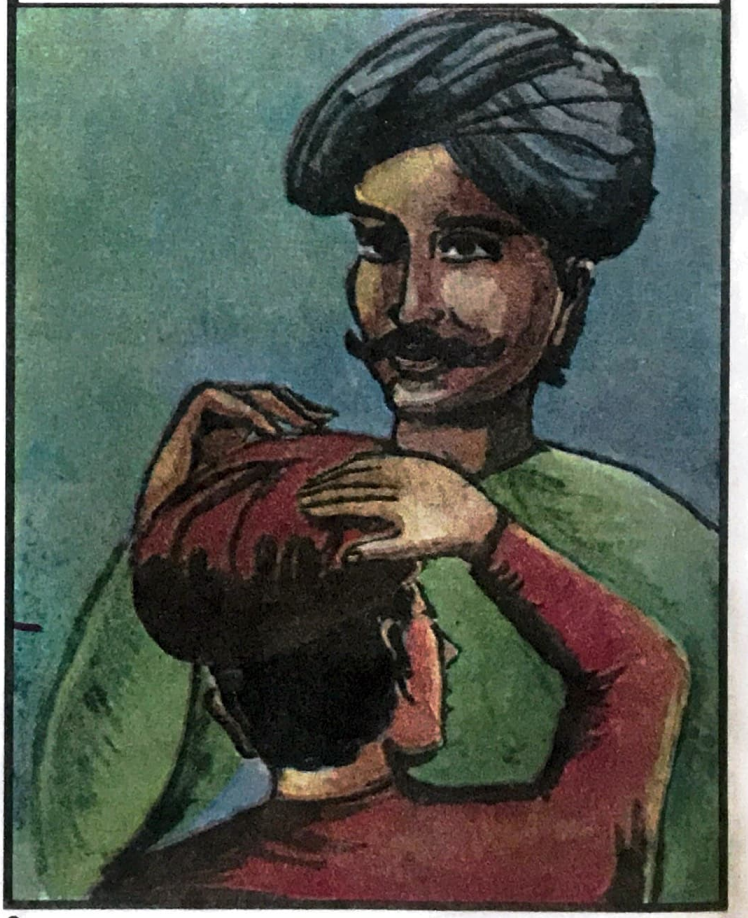

भीखण ने चाचा की यह आदत छुड़ाने की ठानी।

एक दिन चाचा के घर जाने से पूर्व उसने अपनी पगड़ी में बबूल के कांटे छुपा लिए।

चाचा ने सदा की भांति प्यार से उसके माथे पर चांटा मारा।

बबूल के कांटे हथेली में चुभ गये। खून निकल आया।

चाचा ने निर्णय लिया।

भीखण अब सयाना हो चुका है, मार नहीं खायेगा। इसलिए नहीं मारूंगा।

किशोर भीखण कुशाग्र बुद्धि वाला था । पाखण्ड उसे कतई पसन्द नहीं था । उसके गाँव में एक अंधा कुम्हार रहता था । वह अपने में देव आने का ढोंग करता था । अक्सर वह अनुमान से लोगों को चोरी आदि के बारे में बताकर रुपये ऐंठता था । एक बार गाँव में चोरी हो गई । लोग कुम्हार के पास आये और चोर के बारे में पूछा ।

भीखण से बातचीत के दौरान कुम्हार ने पूछ लिया ।

वहम किस पर करते हैं ?

भीखण अंधे की चालबाजी समझ गया । ढोंग का भंडा फोड़ करने हेतु बोला -

वहम तो 'मजने' के बारे में है ।

सच्चाई तो शाम को सामने आएगी ।

कुम्हार झूमने लगा । लोहे की सांकल अपनी पीठ पर खड़काते हुए चिल्लाने लगा । इसी बीच वह बोला -

डाल दे ! मैं कहता हूँ डाल दे !

नाम बताइये महाराज नाम !

उसी शाम को मन्दिर के सामने भीड़ एकत्रित हो गयी । कुम्हार ने पाखण्ड शुरू किया ।

कुम्हार साँकल पटकते हुए चिल्लाया -

चोर है, मजना ! मजना !!

लोग सोचने लगे मजना कौन ? इतने में वहां उपस्थित बकरे का मालिक बोल उठा -

मजना तो मेरे बकरे का नाम है । क्या चोरी मेरे बकरे ने की है ? झूठा है तेरा देवता ।

इसे मजने का नाम तो मैंने ही बताया था । आप लोग आँख वाले होकर अंधे से चोर का पता पूछते हो !

सच्चाई का पता चलते ही लोगों ने भीखण की प्रशंसा की और अपने-अपने घर गये। कुम्हार का पाखण्ड सदा-सदा के लिए खत्म हो गया।

किशोर भीखण को एक बार व्यापार के निमित्त किसी दूसरे ग्राम में जाना था। साथ में उन्होंने एक अधेड़ उम्र के राजपूत ठाकुर को ले लिया।

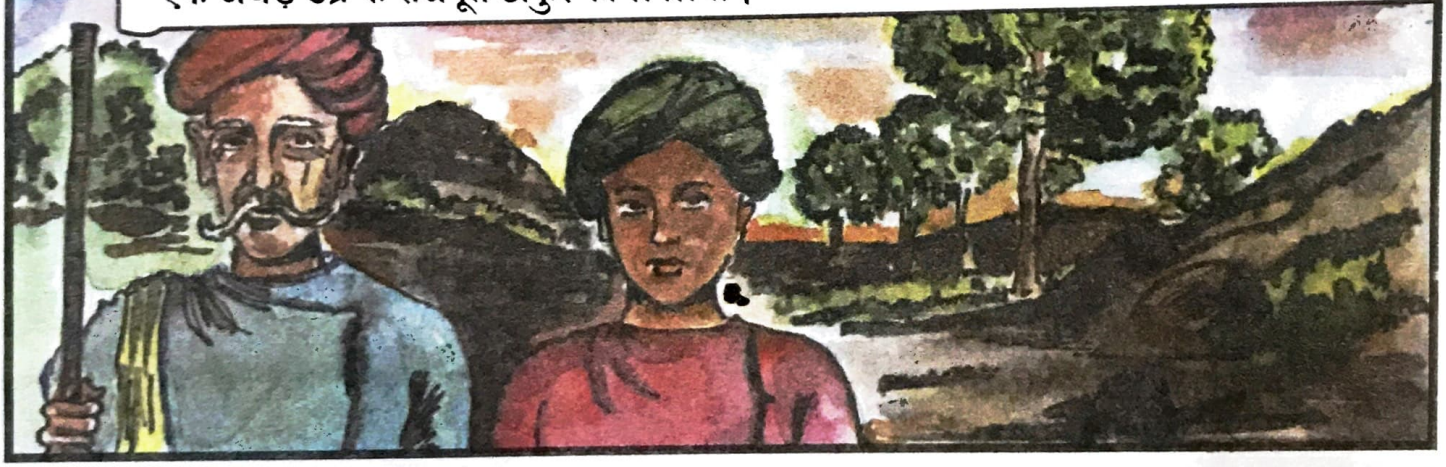

शाम का समय, बीहड़ मार्ग, ठाकुर का नशा उतर गया।

ठाकुर ने कहा ही नहीं, उनके पांव रूक से गये। भीखण को सूर्यास्त से पहले गांव पहुंचना जरूरी था।

यहां उसने बुद्धिमत्ता से काम लिया और तम्बाकू की खोज में एक ओर चला।

तम्बाकू की खोज में निकले भीखण ने एक जगह पड़ा सूखा गोबर उठा लिया।
और उसे एक पत्थर पर रखकर पीसा।
फिर उसे एक कागज में लपेटकर ठाकुर को दे दिया -
तम्बाकू तो मिल गया लेकिन है पुराना।
कोई बात नहीं, काम चल जायगा।
ठाकुर ने बुकनी सूंघी और चल पड़े। इस तरह वे समय से पहले गांव पहुंच गये।

किशोर भीखण की शादी धूमधाम से हो गई ।

शादी के बाद वह 'आणा' लेने ससुराल गया । वहां बहनों ने गीतों में गालियां गाईं, सुनकर युवक भीखण को अटपटा लगा । वे इस रूढ़ि के विरूद्ध बिना खाना खाये खड़े हुए ।
ओ कुण ! काळो जी काबरो ?

कुछ समय बाद भीखण को एक पुत्री पैदा हुई।

भीखण की प्रज्ञा जागृत थी। पुत्री जन्म के बाद वह
शीघ्र ही विरक्त हो गया।

उसकी पत्नी भी
विरक्त हो गयी।

दोनों ही दीक्षा के लिए कृत संकल्प हो गए। जब तक
संयम न आए, दोनों ने एकान्तर तप धारण किया।

✻ भीखण की मित्रता एक विजयवर्गीय गोत्र के युवक रामकृष्ण से थी। रामकृष्ण सोढ़ा ग्राम का निवासी था।

भीखण के वैराग्य का उस पर गहरा असर पड़ा। दोनों ने निश्चय किया कि एक साथ ही साधु बनेंगे।

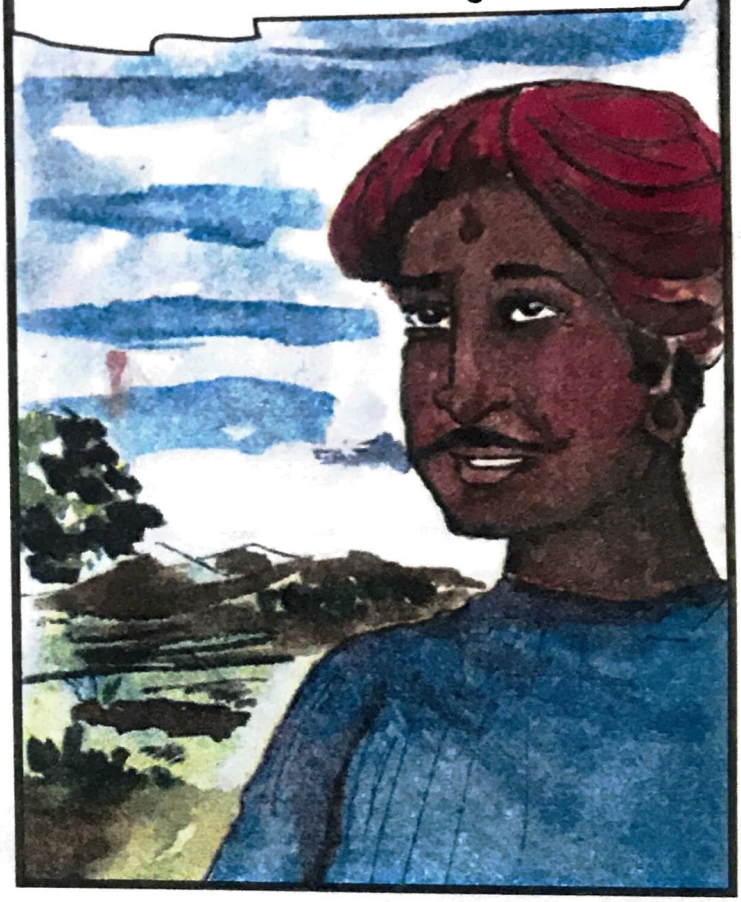

कुछ समय बाद
रामकृष्ण ने सन्त कृपाराम जी से दीक्षा ली फिर भी दोनों में प्रगाढ़ मित्रता बनी रही।

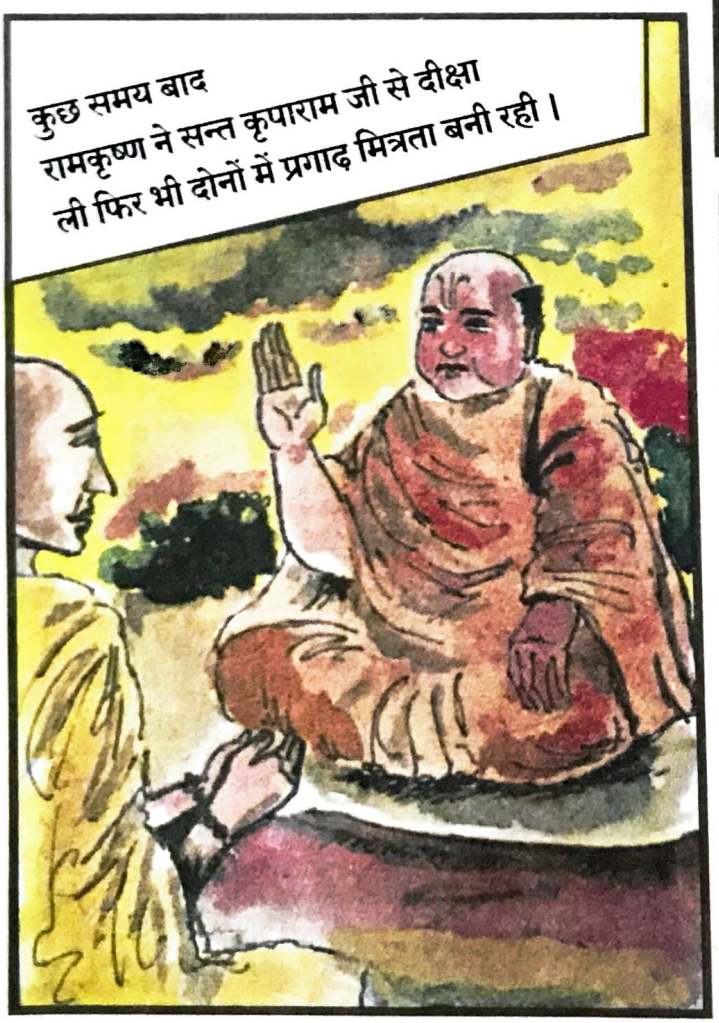

उनकी रचनाओं में भी तेरापंथ की व्याख्या मिलती है।

सो ही तेरापंथ का,
मेरा कहे न कोय।
मैं मेरी से लग रह्यौ,
तो जगतपंथ है सोय॥
काम क्रोध तृष्णा तजे,
दुविधा देय उठाय।
रामचरण ममता मिटे,
तेरापंथ वह पाय॥

कालान्तर में रामकृष्ण का नाम बदलकर सन्त रामचरण जी हो गया उन्होंने आगे चलकर राम -सनेही पंथ में शाहपुरा शाखा का प्रवर्तन किया।

भीखण के विचारों से उसकी पत्नी बहुत प्रभावित हुई और दोनों गृहस्थ जीवन में पवित्रता से रहने लगे।

अचानक एक दिन भीखण की पत्नी का भी देहान्त हो गया। इससे उनकी विरक्ति को और बल मिला।

दुःखी मां को भीखण ने समझाया-
यह तो, मां, दुनिया है। यहां वृद्ध बैठे रहते हैं और जवान आगे का रास्ता ले लेते हैं। इस नश्वर संसार में साधु जीवन ही अच्छा होता है।

यों दुःख देख-कर भागा थोड़े ही जाता है। देख लेना दूसरी शादी करूँगी तेरी, चिन्ता क्यों करता है?

दृढ़ भीखण शादी का त्याग करवाने हेतु जैन मुनि के पास पहुंचा। मुनि ने मन्त्रोच्चार के साथ विवाह का त्याग करवाया।

अरिहंत सिद्ध भगवान की साक्षी से यावज्जीवन शादी करने का त्याग है।

भीखण ने कई संत-महंतों को देखा। कई गच्छ सम्प्रदायों की जानकारी प्राप्त की। वह गच्छवासी यतियों के पास गया। पोतियाबंध वालों को देखा। स्थानकवासी साधुओं से उसका सम्पर्क पहले से ही था, परन्तु उसे पूर्ण सन्तोष कहीं नहीं मिला। पोतियाबंध साधुओं से उसके चाचा दीक्षित हुए थे।

गच्छवासी

स्थानकवासी

पोतियाबंद

एक दिन वहां आचार्य रघुनाथ जी पधारे। भीखण ने अपनी बात उनसे कही और अपनी माँ को समझाने का आग्रह किया।
रघुनाथ जी भीखण के घर गये और दीपांदेवी को समझाया।
भीखण दीक्षा लेना चाहता है तो बाधा क्यों देती हो ?
मैं इसे मुनि बनने की अनुमति नहीं दे सकती गुरुदेव !
दीपां ने अपने स्वप्न का वृत्तांत सुनाया
यही वजह है गुरुदेव !
तब तो अनुमति दे ही दो दीपां, तेरा लाड़ला मुनियों का राजा बनेगा। शेर की तरह दहाड़ेगा। अभी वाणिक कुल में तो राजा होते नहीं !
तब तो गुरुदेव, यदि भीखण दीक्षा लेना चाहता है, तो मेरी अनुमति है।

दीक्षा के लिए प्रस्थान से पूर्व भीखण ने माँ दीपांदेवी को नकद एक हजार रुपये तथा जेवर आदि के साथ मकान सौंपा । उस समय चीजें बहुत सस्ती थीं ।

कुछ चीजों के भाव इस प्रकार थे -

गेहूँ	75पै. प्रति मन
मूंग	75पै. प्रति मन
तिल	56पै. प्रति मन
चना	53पै. प्रति मन
कपास	1रु. प्रति मन
दाल	1रु. प्रति मन
गुड़	1रु. प्रति मन
बाजरी	1रु. प्रति मन
सूत	10पै. प्रति सेर
घी	15पै. प्रति सेर

पच्चीस वर्ष की युवावस्था में भीखण ने बगड़ी ग्राम में गुरु रघुनाथ से दीक्षा ली । वह दिन मिगसर कृष्णा 12 संवत् 1808 था ।

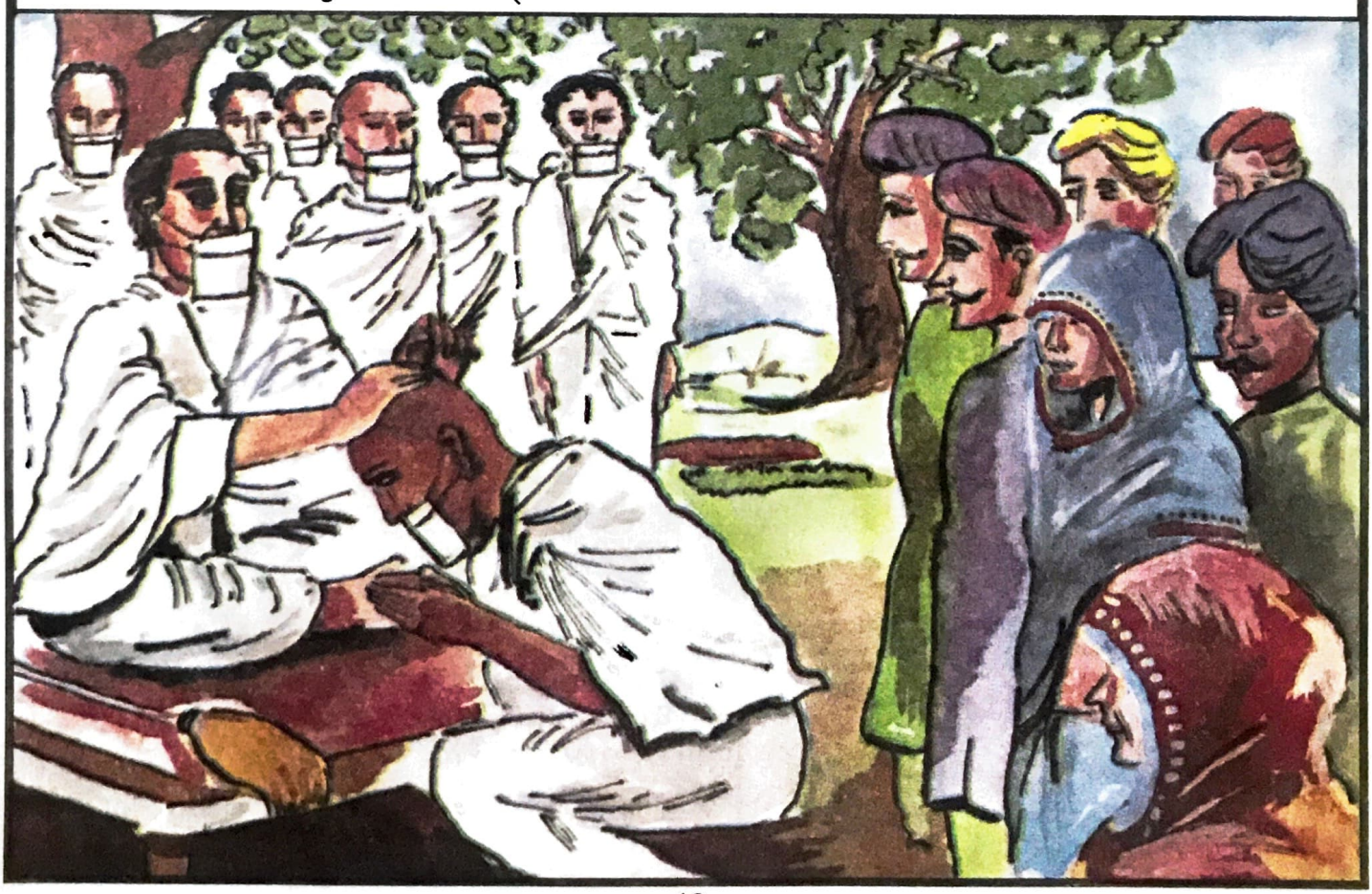

भीखणजी गुरु रघुनाथ के प्रिय शिष्य थे।

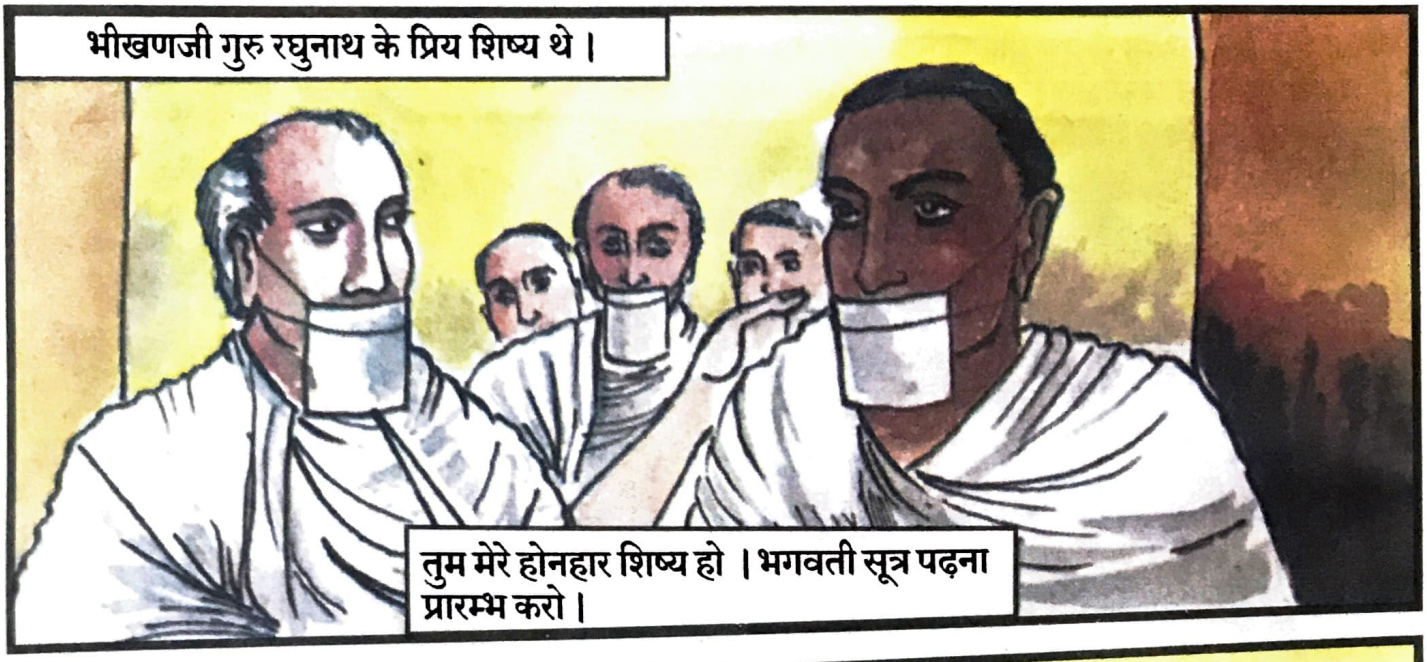

तुम मेरे होनहार शिष्य हो। भगवती सूत्र पढ़ना प्रारम्भ करो।

प्रखर प्रतिभा के धनी मुनि भीखण ने आगमिक ज्ञान के साथ-साथ सम्प्रदाय की आन्तरिक स्थिति का भी अध्ययन किया।

मुनि भीखण की तीक्ष्ण बुद्धि एवं तलस्पर्शी ज्ञान का उल्लेख स्थानकवासी ग्रंथों में भी मिलता है।

दीक्षा लेई तेमणे खूब शास्त्राभ्यास कर्यो,
अभ्यास ने अन्ते तेमणे जैन धर्म की खूबी
बधु ने बधु रहस्य भरी रीते प्रतिपादित
थई।

- मुनि मणिलाल जी, श्री जैन धर्म नो प्राचीन संक्षिप्त इतिहास अने प्रभु वीर पट्टावली।

भीखण जी ना संसार थी उदासीन
परिणाम तो खरा तेय बुद्धि पण तीक्ष्ण
खरी।

- मुनि कनिराम जी (सिद्धांत सार)

साधुओं में व्याप्त शिथिलाचार को देखकर मुनि भीखण उद्वेलित हो उठते और सोचा करते -

क्या घर इन स्थानकों के लिए छोड़ा था ? पहले एक घर था अब गाँव-गाँव में घर बना लिए।

मैं इन सुविधाओं के पीछे जीवन बरबाद नहीं करूंगा ।
शिष्यों के लिए होने वाली खरीद-फरोख्त भी उन्हें साध्वाचार के विरुद्ध लगती ।
देखो भीखण, अभी कलिकाल है, जितना हो जाए ठीक है । ऐसे समय में सम्पूर्ण आचार पालन की आशा मत करो ।
समय-समय पर मुनि भीखण अपनी भावना गुरुदेव के समक्ष रखते लेकिन उनका एक ही जवाब मिलता -
गुरु-शिष्य के स्नेह में फिर भी कोई दरार नहीं पड़ी । पूरा संघ मुनि भीखण की बौद्धिक प्रतिभा से प्रभावित था । भावी आचार्य के रूप में उनकी गणना होने लगी ।

विक्रम संवत् 1813 में मुनि भीखण ने किशनो जी तथा उनके पुत्र भारमल को दीक्षित किया।

एक श्रावक ने आकर सूचना दी कि मेवाड़ के श्रावकों ने वंदना छोड़ दी है। गुरू रघुनाथ जी ने मुनि भीखण को श्रावकों को समझाने हेतु मेवाड़ जाने को कहा।

वि. संवत् 1815 में मुनि भीखण अपने साथ चार अन्य सन्तों को लेकर राजनगर रवाना हो गये।

राजनगर पहुंचकर उन्होंने वहां के श्रावकों को बुलाया और बातचीत की।

वन्दना छोड़ने मात्र से समस्या का समाधान तो होता नहीं।

श्रावकों ने मुनि भीखण से वंदना छोड़ने के कारण बताये । उनसे मिलने वाले श्रावकों में प्रमुख थे - चतरो जी पोरवाल, उनके पुत्र ब्रजराज जी, लालू जी पौत्र जवेरचन्द जी तथा बच्छराज जी ओसवाल।

मुनि भीखण ने उन्हें चातुर्य से अपने सम्प्रदाय की मान्यताओं के प्रति सहमत करने का प्रयास किया ।

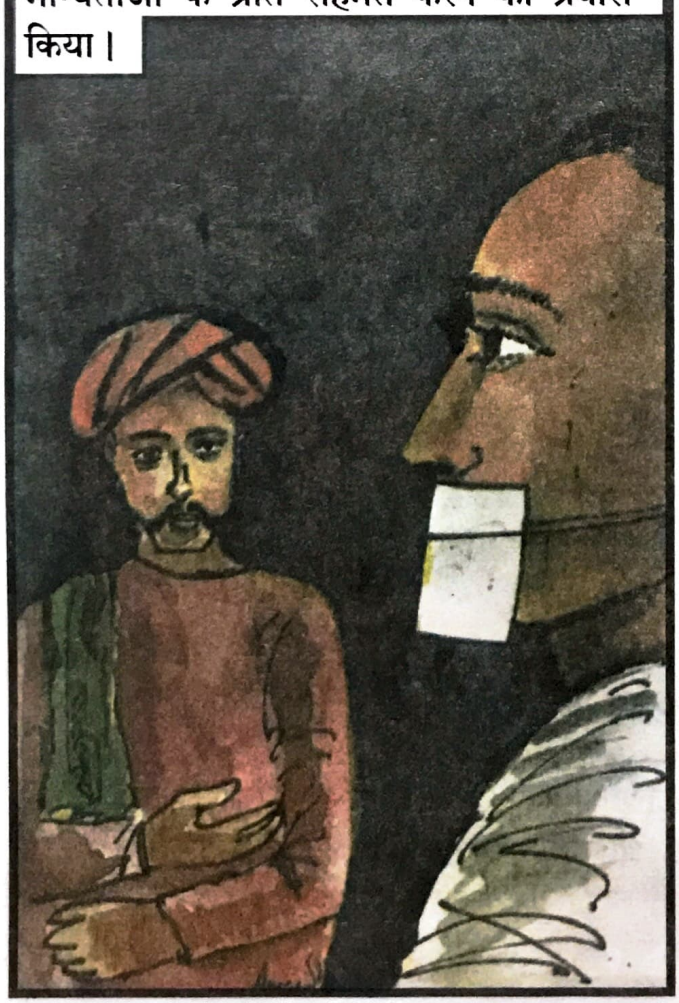

श्रावकों ने वन्दना करते हुए कहा -

आपको बहुत बैरागी सुना है । शंका का निवारण तो नहीं हुआ परन्तु आशा है कि इस चातुर्मास में हो जायेगा ।

उसी रात्रि में मुनि भीखण को शीततापचढ़ा। शरीर काँपने लगा। विचारों में उथल-पुथल मची।
यदि अभी मृत्यु हो जाये तो जन्म ही बिगड़ जाये। गुरु के मोह में सच को झूठ और झूठ को सच बताया। अब मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि स्वस्थ होते ही सत्य की खोज करूंगा और उसी मार्ग पर चलूंगा।

इस संकल्प के साथ ही ज्वर उतर गया। सुबह होते ही भाई-बहिन दर्शनार्थ आये।
आपकी शंका के निवारण के विषय में मैंने जो कहा है उसे अन्तिम न समझना। इस चातुर्मास में मैं आगमों का अध्ययन करना चाहता हूँ तभी अन्तिम निर्णय पर पहुंचा जा सकता है।

श्रावकों ने अपने भंडार से 32 सूत्र निकाल दिए । भीखण मुनि ने चातुर्मास में उनका दो-दो बार अध्ययन किया ।

वर्तमान मान्यताओं और आगमिक अवधारणाओं में जहां-जहां फर्क था उसे लिपिबद्ध किया ।

कुल मिलाकर ३०६ बातों का अन्तर निकला मुनि भीखण ने निर्णय लिया-वर्तमान आचार-विचार के रहते साधुत्व सम्भव नहीं है ।

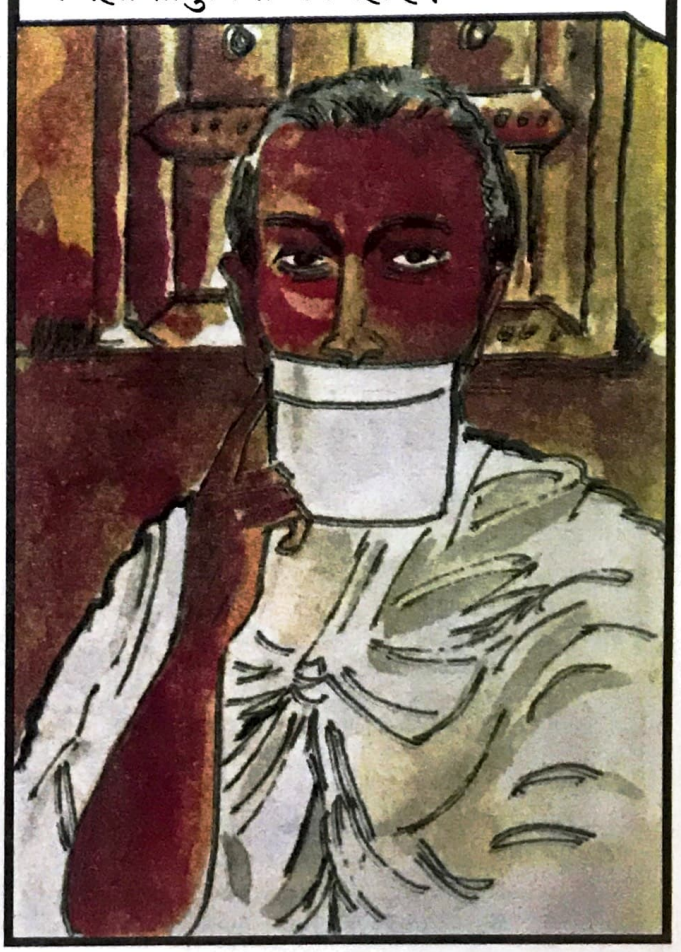

भीखण जी ने श्रावकों से स्पष्ट कह दिया कि वर्तमान में हममें चारित्र नहीं है । उन्होंने आश्वासन दिया कि वे गुरु महाराज के पास जायेंगे और उनसे इस बारे में निवेदन करेंगे ।

यदि गुरुदेव तैयार नहीं हुए तो मैं अकेले ही सत्य पर चलूँगा ।

यह सुनकर श्रावक गद्‌गद् हो गये । विधिवत् बंदना करते हुए बोले -

आज हमारी शंका का निवारण हो गया है । आपको जैसा सुना था वैसा आपने कर दिखाया ।

अगले दिन पांचों साधुओं ने इस विषय पर एकमत होकर राजनगर से विहार किया ।

रास्ते में भिक्षा आदि की सुविधा के लिए उन्होंने अपने को दो समूहों में बांटकर अलग -अलग प्रस्थान किया। चलते समय भीखण जी ने वीरभान जी को इंगित किया कि गुरु जी के पास यदि वह पहले पहुंचें तो कुछ न कहें।
संयोगवश वीरभान जी तथा उनके साथ एक अन्य सन्त पहले ही स्थानक पहुंच गये । वंदन एवं कुशल क्षेम के पश्चात् गुरु रघुनाथ ने उनसे पूछा -
श्रावक समझे क्या ?
अपन क्या समझे ?
वे क्या समझे अपन समझ गये।
अपन झूठे, श्रावक सच्चे !
सुनकर गुरुदेव चौंक गये, वीरभान जी ने दो चार बातें और कह दीं।

दूसरे दिन मुनि भीखण ने गुरुदेव के दर्शन किए, परन्तु गुरुदेव ने मस्तक पर हाथ नहीं रखा।

शायद वीरभान जी ने कुछ कह दिया है।

आर्यवर, यह अकृपाभाव क्यों?

तू वहां से भ्रमित होकर आया है।

यदि मैं भ्रमित हूँ तो आप भ्रम मिटायें।

आखिर शांत होकर गुरुदेव ने मस्तक पर हाथ रखा।

इसके उपरान्त मुनि भीखण लगभग 1½ वर्ष तक साथ रहे।

आचार विचार सम्बन्धी बातों को लेकर खूब चर्चा की लेकिन गुरु रघुनाथ का एक ही जबाब था -

तुम्हारा कथन आगमसम्मत है फिर भी अभी कलिकाल है इसलिए वैसा नहीं बना जा सकता। मैं कोई परिवर्तन करने की स्थिति में नहीं हूँ।

अपने गुरु से स्पष्ट उत्तर मिल जाने पर मुनि भीखण उठ खड़े हुए और विनम्रता से अपना संबंध विच्छेद कर लिया । यह घटना बगड़ी ग्राम की है ।

भीखण स्थानक से निकले तो चारों तरफ हलचल मच गयी । वहाँ के श्रावक समाज ने निर्णय लिया कि इन्हें स्थान न मिले तो वापस आ सकते हैं इसलिए घोषणा करवाई गई कि इन्हें कोई स्थान न दे । इस हेतु घोषणा करने के लिए सेवक को भेजा गया ।

बगड़ी ग्राम से बड़ी संख्या में लोग मुनि भीखण तथा उनके साथ स्थानक छोड़े हुए सन्तों को देखने के लिए निकले लेकिन किसी ने भी स्थान देने की हिम्मत नहीं की ।

इतने में ही जोर की आंधी और तूफान चल पड़ा। भीखण मुनि सहित सभी का चलना मुश्किल हो गया।

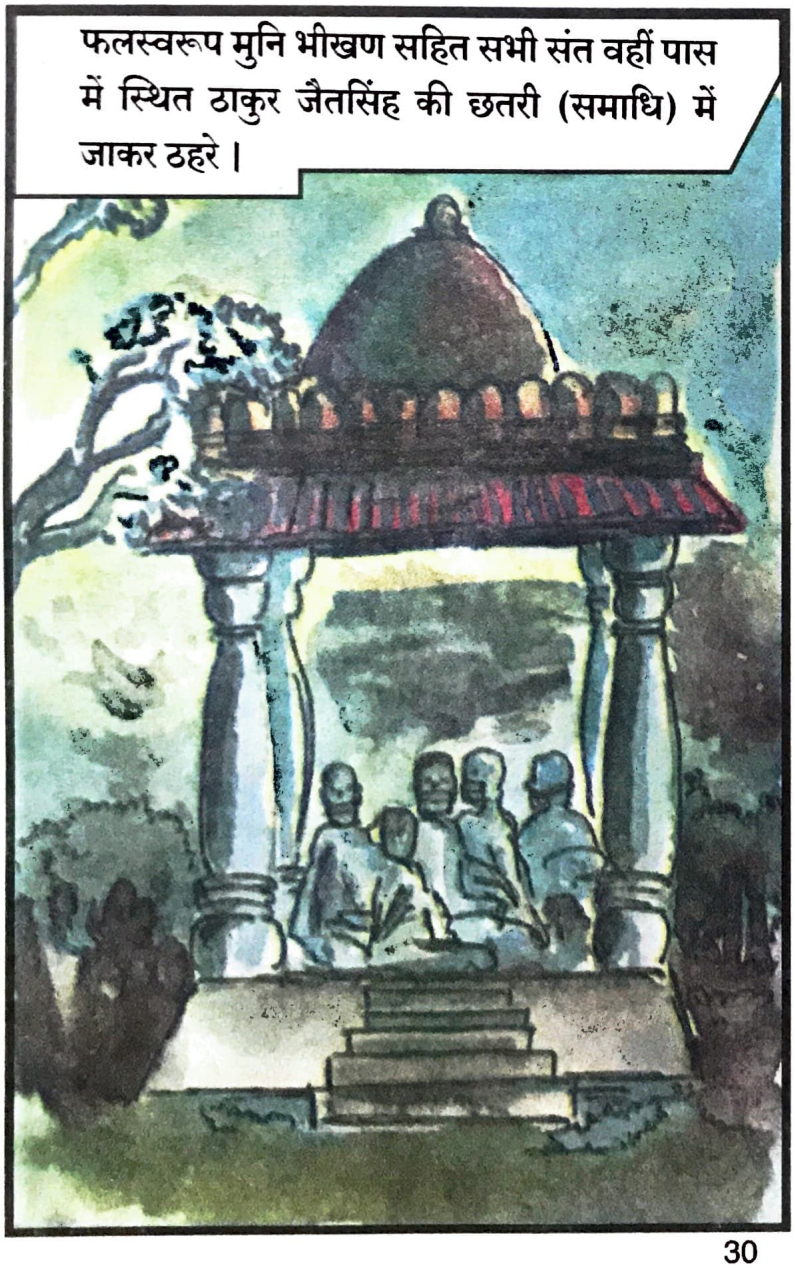

फलस्वरूप मुनि भीखण सहित सभी संत वहीं पास में स्थित ठाकुर जैतसिंह की छतरी (समाधि) में जाकर ठहरे।

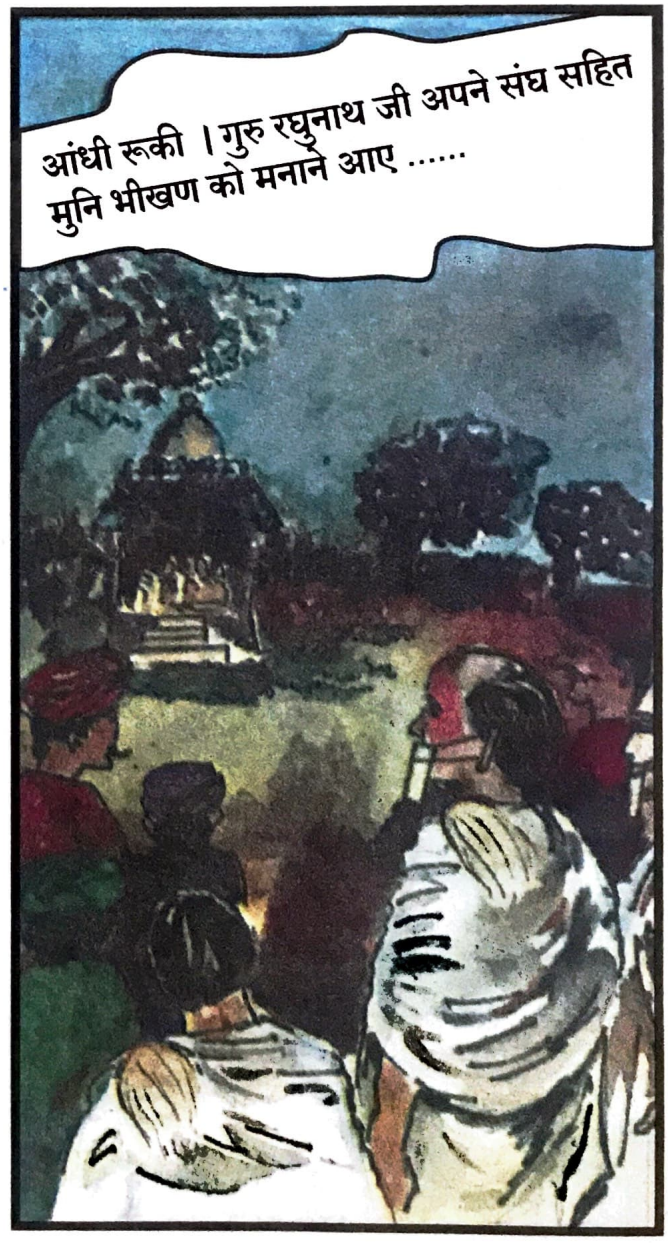

आंधी रूकी । गुरु रघुनाथ जी अपने संघ सहित मुनि भीखण को मनाने आए ......

....तथा उनसे वापस चलने हेतु आग्रह किया।

गुरुदेव ! साथ रहने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है पर मेरा विरोध तो संघ में व्याप्त शिथिलाचार से है। शिथिलाचार छोड़ें तो ठीक, अन्यथा हम दोनों के रास्ते अलग हैं।

भीखण ! इस कलिकाल में दो घड़ी भी शुद्ध साधुपन आ जाए तो सर्वज्ञ बन जाए। अभी तो न सर्वज्ञता है और न ही शुद्ध चरित्र।

दो घड़ी तक तो मैं श्वास रोककर भी रह सकता हूँ, यदि इससे सर्वज्ञता मिलती हो तो; लेकिन कलियुग के नाम पर शिथिलाचार मैं नहीं सह सकता।

अट्ठम तप पहले तीन दिन का होता था। आज भी तीन दिन का होता है फिर अन्य आचारों में शिथिलता क्यों ?

पूज्य रघुनाथ जी मुनि भीखण के उत्तर से पूर्णतया निराश हो गये। एक साथ पांच शिष्य चले जाने से भारी सदमा पहुंचा, गला रूंध गया, आंखें भर आयीं।

इस पर मुनि उदयभानु बोले -

आप टोले के मालिक हैं। ऐसा क्यों करते हैं, यह आपको शोभा नहीं देता।

रूंधे स्वर में रघुनाथ जी बोले -

किसी के एक जाता है तो भी विचार होता है, मेरे तो एक साथ पांच-पांच जा रहे हैं मन में तो आ ही जाती है।

भीखण का हृदय भी करूणा से भर आया। सोचने लगे -

निष्क्रमण के समय मेरी संसार पक्षीय माता की आंखों में आंसू थे । आज टोले से निष्क्रमण किया है, तो गुरु जी की आंखों में आसूं हैं। इन आंसुओं की तरफ देखूंगा तो लकीर का फकीर बना रहूँगा; राग को छोड़ने वाला ही सत्य को पा सकता है।

राग का तीर जब नहीं लगा तो पूज्य जी झुंझला उठे।

अलग तो हुआ है पर तू अपने आपको समझता क्या है ? आगे तू है तो पीछे मैं । और लोगों को भी पीछे लगा दूँगा।

आपका आशीर्वाद फलीभूत हो । ऐसा आशीर्वाद कोई गुरु ही दे सकता है !

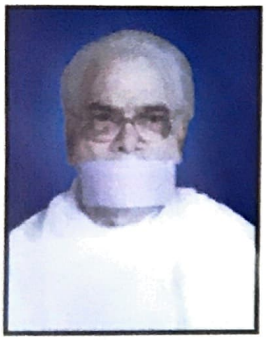

मुनि श्री सुमेरमल जी (लाडनूं)

जन्म - चैत्र शुक्ला 14, सं. 1989, लाडनूं (राज.),
दीक्षा - माघ शुक्ला 7, सं 1998, सरदारशहर (राज.)
आचार्य श्री तुलसी द्वारा
अग्रगण्य - ज्येष्ठ कृष्णा 3 सं. 2010, भीनासर (राज.)
सम्बोधन - तेरापंथ दर्शन मनीषी - माघ शुक्ला ६ सं. 2060, जलगांव (महाराष्ट्र)
विशेष : तीन मुमुक्षुओं को गुरु - निर्देश से दीक्षा प्रदान

मुनि श्री द्वारा लिखित चित्रकथा माला

अखूट खजाना

जैन धर्म में सामायिक एवं संत दर्शन का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है । इसके महत्व को प्रतिपादित करने वाले दो कथानक इस चित्रकथा में लिये गये हैं ।

क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु - भाग-1

तेरापंथ के प्रवर्तक, महान् संत, शिथिलाचार के विरुद्ध शंखनाद फूंकने वाले आचार्य भिक्षु के जन्म, स्थानकवासी परंपरा में दीक्षा व अभिनिष्क्रमण का चित्रण है ।

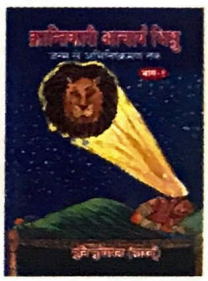

क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु - भाग-2

अभिनिष्क्रमण के बाद विरोध का स्वर बुलंद हुआ, केलवा की अंधेरी ओरी में तेरापंथ की विधिवत् स्थापना हुई । आहार पानी व स्थान की समस्या सामने आई, इन स्थितियों का सजीव निदर्शन है ।

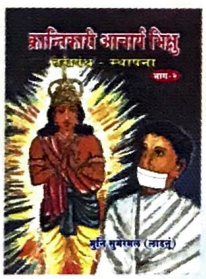

क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु - भाग-3

आचार-संहिता का कड़ाई से पालन, सिद्धान्त प्रतिपादन की कुशलता, असंकीर्णता, न्यायप्रियता, संघर्ष में भी शीतलता एवं संतुलन, प्रत्युत्पन्न मति, विनोद प्रियता जैसी विशेषताओं को प्रकट करते आचार्य भिक्षु के जीवन संस्मरणों का गुंफन है।

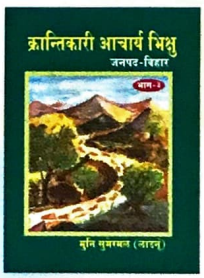

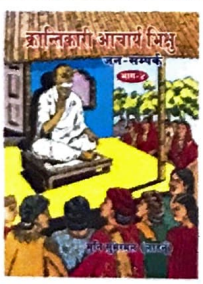

क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु - भाग-4

आचार्य भिक्षु हर बात को कथानाक व दृष्टांत के माध्यम से हरेक के गले उतार देते थे । उनका जनसंपर्क व्यापक था । ठाकुर (जागीरदार) से लेकर ठेट किसान तक उनसे प्रभावित थे । प्रस्तुत भाग में उनके जनसंपर्क की एक झलक प्रदर्शित की गई है ।

क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु - भाग-5

आचार्य भिक्षु आकर्षक व्यक्तित्व के धनी थे । उनके पास जो कोई भी आता वह प्रभावित हुए बिना नहीं रहता । विरोधी लोग भी उनकी विद्वता, साधनाशीलता कुशल वक्तृत्व एवं कष्ट सहिष्णुता का लोहा मानते थे । इन सबकी झलक इस भाग में है ।

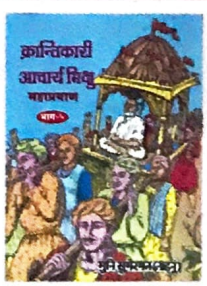

क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु - भाग-6

तेरापंथ के दूसरे आचार्य श्री भारमल जी आचार्य श्री भिक्षु के सर्वात्मना समर्पित थे । तीसरे आचार्य श्री रायचन्द जी बड़े पुण्यवान आचार्य थे ।
दोनों स्वामीजी के हाथों दीक्षित हुए । प्रस्तुत चित्र कथा में दोनों के जीवन की संक्षिप्त झलक प्रस्तुत है ।

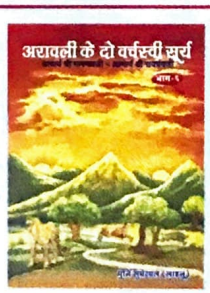

मुनि श्री की अन्य कथा पुस्तकें ।

1. परीलोक
2. बुद्धिलोक
3. नीतिलोक
4. प्रज्ञालोक
5. सत्यलोक
6. दिव्यलोक
7. नारीलोक
8. कर्मलोक
9. उपकार
10. संस्कार
11. सप्त व्यसन
12. विद्याधर श्रीपाल
13. जादूगर श्रीकांत
14. नैतिक कहानियां भाग-1
15. नैतिक कहानियां भाग - 2 आदि - आदि ।

आशीर्वचन

चित्रकथा साहित्य की आकर्षक विधा है । यह आबालवृद्ध सबके मन को भाती है । भावी पीढ़ी के लिए तो यह संस्कार-निर्माण की कुन्जी बन सकती है । चित्रकथाएं बहुत लिखी जाती हैं, पर जो सुरुचिपूर्ण, संस्कार निर्मात्री और संघीय निष्ठा जगाने वाली चित्रकथा हो, उसका महत्त्व ही अलग है, "क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु" चित्रकथा हमारे संघीय इतिहास को उजागर करती है । संस्कार-निर्माण की दृष्टि से भी उसकी उपयोगिता असंदिग्ध है । इनमें वर्णित आचार्य भिक्षु के प्रेरक जीवन प्रसंग पाठकों के लिये बोधपाठ का काम करेंगे, ऐसी आशा की जा सकती है।

मुनि सुमेर (लाडनूं) इतिहास वेत्ता तो है ही, वह आज की भाषा में आज के तरीके से इतिहास लेखन के मर्म को भी पहचानता है । उसकी संघनिष्ठा और समाज में संघीय संस्कार भरने का कौशल बेजोड़ है । कलकत्ता महानगर का पंचवर्षीय प्रवास इसका साक्षी है । अहमदाबाद में भी वह सुनियोजित रूप में सतत काम कर रहा है । अन्यान्य कार्यों के साथ संघ के लिये उपयोगी साहित्य चित्रकथा के निर्माण का सिलसिला सिद्ध करता है कि वह समय-नियोजन की कला में भी निष्णात है ।

विशेष उद्देश्य के साथ लिखी गई ये चित्रकथाएं पाठकों के आकर्षण को बनाये रखती हुई बच्चों के संस्कार निर्माण में उपयोगी बने, यही मंगल भावना है।

२४ जनवरी, १९९७

गणाधिपति तुलसी

आचार्य महाप्रज्ञ